

सफलता की कहानी



महिला किसान का नाम : श्रीमती रेखा देवी

उम्र : 37

शिक्षा : अनपढ़

गाँव : मानिकपुर

प्रखण्ड : सरैया

जिला : मुजफ्फरपुर, बिहार

मोबाईल सं. : 7654652707

1. सफलता से पूर्व की स्थिति : रेखा देवी एक भूमिहीन किसान थीं और पहले पट्टे की जमीन पर अनाज और दालों का उत्पादन करके कमाई करती थीं। खाली समय में वह कृषि मजदूर के रूप में काम करती थी और मछलियाँ बेचने का काम करती थी। किसान को सालाना 500 रुपये की आमदनी होती थी। उन्होंने गेहूँ, धान, तोरिया और दूध उत्पादन आदि से 33049 रुपये कमाए। उन्हें बीजों की उच्च उपज, मिट्टी की क्षारीयता, बाढ़, सूखा और विपणन आदि जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा।

2. कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका (विवरण) जैसे : (क) जागरूकता (ख) प्रशिक्षण (ग) अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्ष (घ) प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन (च) पैकेजिंग एवं (छ) विपणन
कृषि विज्ञान केन्द्र (KVK) कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके द्वारा विभिन्न गतिविधियों और सेवाओं के माध्यम से किसानों को लाभ पहुँचाने का कार्य किया जाता है। यहाँ इनकी भूमिका का विवरण दिया गया है:

(क) जागरूकता

कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों, फसलों के चयन, कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग, मौसम की जानकारी, और बाजार की स्थितियों के बारे में जागरूक करते हैं। इससे किसान अपनी फसल उत्पादन को बेहतर बना सकते हैं और आधुनिक कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं।

(ख) प्रशिक्षण

KVK विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं, जिनमें किसानों को नई तकनीकों, कृषि के वैज्ञानिक तरीकों, मृदा परीक्षण, बागवानी, पशुपालन आदि के बारे में प्रशिक्षित किया जाता है। यह प्रशिक्षण उन्हें कृषि कार्यों में दक्षता और उत्पादकता बढ़ाने में मदद करता है।

(ग) अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्ष

कृषि विज्ञान केन्द्र कृषि अनुसंधान के नए परिणामों को सीधे किसानों के सामने प्रस्तुत करते हैं। इनसे किसान फसल उत्पादन में नवीनतम शोध और तकनीकों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उनकी खेती में सुधार होता है।

(घ) प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन

KVK किसानों को कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन के तरीकों से अवगत कराते हैं। जैसे, फलों और सब्जियों के जूस, जैम, अचार आदि बनाने की प्रक्रिया, जिससे किसान अपने उत्पादों की गुणवत्ता और बाजार मूल्य बढ़ा सकते हैं।

(च) पैकेजिंग

कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों को उचित पैकेजिंग तकनीकों के बारे में जानकारी देते हैं, ताकि उनके उत्पाद सुरक्षित रहें और ग्राहकों तक अच्छे तरीके से पहुँचें। अच्छी पैकेजिंग उत्पाद की आकर्षण और दीर्घकालिकता बढ़ाती है।

(छ) विपणन

KVK किसानों को विपणन रणनीतियों, स्थानीय और राष्ट्रीय बाजारों की जानकारी, और बिक्री के लिए उचित मूल्य निर्धारण के बारे में सलाह देते हैं। इसके माध्यम से किसान अपने उत्पादों को बेहतर तरीके से बेच सकते हैं और लाभ कमा सकते हैं।

इन सभी पहलुओं के माध्यम से, कृषि विज्ञान केन्द्र किसानों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और कृषि क्षेत्र को अधिक उत्पादक और लाभकारी बनाने का प्रयास करते हैं।

3. उपरोक्त गतिविधियों का परिणाम विवरण में :

2019 में, उन्होंने इच्छुक महिलाओं का एक अनौपचारिक समूह बनाया और बड़े पैमाने पर लाख की चूड़ी का उत्पादन शुरू किया और इसे अपनी दुकान के माध्यम से सीधे ग्राहक बाजार में बेचा। वह केवीके, सरैया और अन्य गैर सरकारी संगठनों में मास्टर ट्रेनर के रूप में भी काम कर रही हैं। वह उन महिलाओं को प्रशिक्षण प्रदान करती हैं जो लाख चूड़ी विपणन शुरू करना चाहती हैं। प्रशिक्षण प्रक्रिया के दौरान, उन्होंने अपना परिचय कृषि श्रमिक के रूप में दिया और अपनी कहानी भी साझा की। इतनी सारी अनपढ़ गरीब महिलाओं ने भी हौसला बढ़ाया और उनमें से पांच ने रूपौली, मानिकपुर और बासोचक गांव में अपना काम शुरू कर दिया।

4. परिणाम :

क्र. सं.	उत्पादन मूल्य (किंवटल)	लागत (रु.) / किंवटल	सकल उत्पाद	शुद्ध आय	रोजगार सृजन (श्रमदिवस)
कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका से पहले					
गेहूँ	16335	11200	12.1	5135	180-200 दिन/वर्ष
धान	24750	20160	19.8	4590	
टोरिया	8624	4200	3.08	4424	
भैंस और गाय	25200	6300	840	18900	
	74909	41860		33049	
कृषि विज्ञान केन्द्र की भूमिका के बाद					
गेहूँ	28798	15200	14.96	13598	180-200 दिन/वर्ष
धान	41301	27000	22.11	14301	
टोरिया	15576	6000	3.52	9576	
भैंस और गाय	42000	10500	1050	31500	
लाख की चूड़ी	276000	82800	1380	193200	
	403675	141500		262175	

5. परिणाम (Outcome) का महिला और उनके परिवार/अन्य महिलाओं पर प्रभाव :

इंटरक्रॉपिंग, जीरो टिलेज, पोषक तत्व प्रबंधन, पशुधन और लाख चूड़ी आदि जैसे डीएफआई हस्तक्षेपों के साथ, उन्हें 262175 रुपये की वार्षिक आय मिल रही है। इसके अलावा, रुपये की लागत बचत भी हो रही है। गेहूँ, धान, तोरिया दूध, लाख चूड़ी और दूध उत्पादन आदि में 12000 रु.

